



स्थानीय इतिहास नवप्रवाह दृष्टीकोन- अँनाल्स परंपरा

Prof. Dr. Sanjay Gaikwad
(H.O.D.) Dept. of History
M. H. Mahadik Arts & Commerce College,
Modnimb (Maharashtra)



प्रस्तावना :-

मनुष्य जन्म से ही वह अपने इतिहास निर्माण का कार्य कर रहा है। उसके जीवन का प्रत्येक छोटे से छोटा आविष्कार एक नया इतिहास निर्माण करता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो मानव जीवन का अध्ययन कर भविष्य के लिए उसे प्रेरित करते रहती हैं। अतीत मानव जीवन का दर्पण है। जिसमें तत्कालीन समय को तो हम देख ही सकते हैं और उससे प्रेरणा ग्रहण कर भविष्य में आनेवाली समस्याओं का सामना भी आसानी से कर सकते हैं। इतिहास लेखन मानव के वर्तमान और अतीत को जोड़ता है, और यह भविष्य में भी मार्गदर्शन करते रहता है। सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि क्षेत्रों में समय-समय पर जो परिवर्तन होते हैं उन्हें इतिहास में दर्ज किया जाता है। यह दर्ज करने की प्रक्रिया भलेही किसी भी रूप में हो। इतिहास समाज और राष्ट्र की एक विशाल धरोहर है। मनव समुदाय के साथ साथ राष्ट्र भी अपनी भविष्य की नीतियों और जीवन जीने के तरीकों को निर्धारित करने के लिए इतिहास को आधार बनाना पड़ता है। मात्र भौतिक प्रगति ही मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिए पर्याप्त नहीं है, लेकिन इसके लिए विवेक, संयम, ज्ञान आदि का मेल होना आवश्यक है। इसका एहसास इतिहास काराता है।

मानवी समुदाय की पहचान बड़े पैमाने इतिहास के माध्यम से होती हैं। इतिहास व्यक्ति के साथ-साथ समूह को भी अस्मिता एवं अपने अस्तित्व की पहचान करवाता है। प्रत्येक इतिहासकार अपनी स्वतंत्र पद्धति से लिखता है। इसमें सीमित साधनों का प्रयोग, विशिष्ट विचारों का प्रभाव, पूर्वग्रहों और विशिष्ट लक्ष्य को अपने सम्मुख रखता है। प्राचीन काल से दुनिया भर में इतिहासलेखन की एक परंपरा मौजूद है, लेकिन पश्चिमी देशों में मानवविद्याशाखा की एक उपशाखा इतिहास की उत्कांति पुनर्जागरण काल से ही शुरू की है। इतिहास लेखन परंपरा में जिन संसाधनों का प्रयोग कर तत्कालीन समय का विवेचन एवं विश्लेषण किया जाता है उन्हें प्राथमिक संसाधन कहा जाता है। उसके पश्चात लिखित रूप से जिन संसाधनों का प्रयोग किया जाने लगा उन्हें दोयम दर्जे के संसाधनों के रूप में पहचाना जाता है। प्राथमिक संसाधनों की मौलिकता, प्रामाणिकता और विश्वसनीयता स्थापित करने के बाद ही प्राथमिक संसाधनों को इतिहास लेखन में इस्तेमाल किया जा सकता

है। इतिहासकार का यह कर्तव्य है कि वे उन संसाधनों से अवगत होने वाले तथ्यों को प्रस्तुत करें, इसलिए लियोपोल्ड रैके (Leopold Racker) का कहना है कि, “इतिहास लेखक का उद्देश्य यह होता है कि वह वस्तुनिष्ठता से लेखन करे किंतु समय-समय पर तत्कालिन घटनाएँ, परिवेश, संस्कृति आदि के अनुसार इतिहास लेखन पद्धति में बदलाव संभव होता है।”

वर्तमान समय भले ही विज्ञान एवं सूचनाप्रौद्योगिकि अर्थात् विज्ञान एवं तकनीक का है, फिर भी एक राष्ट्र, एक समाज के निर्माण में इतिहास की आवश्यकता होती है। इतिहास का उपयोग सामाजिक समता, मानवता और राष्ट्र की अखंडता के लिए, राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के लिए, समुदाय को जागृत करने के लिए किया जाता है। इतिहास लेखन करते समय धर्म, राष्ट्र और मानव में मैत्री भाव पैदा होना आवश्यक है। इतिहास लेखन मानव समाज की मानसिक और बौद्धिक आवश्यकता है। मानव इतिहास बनाता है और इतिहास लेखन के माध्यम से हम अपने अस्तित्व एवं मानवी जीवन की इतिहास के बिना, मानव समाज एक स्मृति विहीन पश्च की तरह बन जाएगा।”

यूरोप में जब राष्ट्र एवं प्रदेश का विचार राजनीति को प्रभावित कर रहा था तब मानव समाज की उन्नति के लिए राष्ट्र एवं प्रदेश महत्वपूर्ण है, इसलिए इससे संबंधित विभिन्न गतिविधियों को महत्व प्राप्त होने के कारण राजनीतिक संघर्ष की धारणा यूरोप और भारत में इतिहास लेखन का प्रमुख स्रोत बन गई। 17 वीं शताब्दी में वैज्ञानिक क्रांति के बाद, मानव विज्ञान में सामाजिक विज्ञान, जैसे प्राकृतिक विज्ञान को अध्ययन के लिए शास्त्रीय अनुसंधान पद्धति को अपनाना शुरू हुआ। वैज्ञानिक अनुसंधान में अनुभवजन्य साक्ष्य, प्रयोग, अनुमान, निगमन और अग्रगामी तर्क को महत्व मिला है। वैज्ञानिकता और व्यावहारिकता वैज्ञानिक अनुसंधान का एक अनिवार्य तत्व बन गया। शास्त्रीय संशोधन में विवेकनिष्ठता एवं प्रत्यक्ष प्रमाण को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाने लगा। इस शोध पद्धति ने कुछ धारणाएँ निर्मित की हैं। मनुष्य अपने विवेक, सद्सदविवेक बुद्धी और ज्ञानेन्द्रियों के उचित उपयोग के साथ वास्तविकता या बाहरी दुनिया का निष्पक्ष मूल्यांकन कर सकता है। मानव समाज वैश्वीक है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को होनेवाला आकलन भी वैश्वीक ही होता है।

भविष्य को केंद्र में रखकर राष्ट्र की एकात्मता और संप्रभुता को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से अपने परिवेश में अनुकूल परिवर्तन करने की आवश्यकता होती है। दुनिया के इतिहास लेखन में वैचारिक परिवर्तन और रुझान के चलते भारतीय इतिहास लेखन में भी नए परिवर्तनकारी विचारों का अंतर्भाव हुआ है। प्रसिद्ध इतिहास लेखक व्हॉल्टेर, व्हिको, हेगेल, लियोपोल्ड, रैके आदि द्वारा प्रस्तुत तत्वज्ञान में इतिहास के बदलते स्वरूप को देखा जा सकता है। इन इतिहासकारों के विचार निम्नानुसार हैं-

१. रैके ने इतिहास को वस्तुनिष्ठ दृष्टि से देखने का प्रस्ताव रखा।
२. डॉ डी.डी. कोसंबी ने इतिहास को भौतिकवादी दृष्टि से देखने की पद्धति को दरकीनार कर दिया।
३. कार्ल मार्क्स और एंगल्स ने नए दृष्टिकोण से इतिहास को प्रस्तुत करने की कोशिश की। मार्क्स के विचार शोषक और शोषितों के बीच के संघर्ष को प्रस्तुत करते हैं।
४. अगस्त कॉम्पट ने वास्तविक रूप से यह स्पष्ट किया कि प्रत्यक्षदर्शिता के रूप में ऐतिहासिक घटनाओं का अध्ययन कर मानव समाज के सिद्धांतों को प्रस्तुत किया जा सकता है।

भारत में ब्रिटीश सत्त की नीव रखनी हो तो सबसे पहले यहां की भाषा, संस्कृति का ज्ञान आदि संबंधी जानकारी आवश्यक समझी। इसी विचार से रॉबर्ट आर्म, सर विलियम जोन्स, कनिंगहॉम आदि दार्शनिकों ने भारतीय संस्कृती के अध्यन की शुरुआत की। इसमें से जो भी लिखित सामग्री उपलब्ध होती है उसे पौत्रात्तवादी विचारधारा कहते हैं। ब्रिटिश सरकार ने भारत के प्राचीन और मध्ययुगीन काल को दोषी ठहराकर यह बताने कोशिश की कि, ब्रिटिश सरकार कितनी महान थी और भारत के लोग कितने पिछड़े हैं। जेस्स मिल, एलफिस्टन, ग्रैंट डफ आदि ने अपने इतिहास लेखन के माध्यम से साप्राज्यवादी इतिहास का लेखन किया।

पश्चिमी शिक्षा से प्राप्त आधुनिक सुधारवादी सोच से प्रेरित होकर भारतीय शिक्षित वर्ग ने ब्रिटिश आरोपों का खंडन किया और जनसामान्य में देशभक्ति का गैरव जगाया। साथ ही हमारी सभ्यता प्राचीन काल से ही कितनी महान है यह साबीत करते हुए ब्रिटिश सरकार भारतीय समाज का आर्थिक शोषण करती हैं, यह बताने का प्रयास किया। इसी लेखन पद्धति को राष्ट्रवादी विचारधारा कहा जाता है। इस विचारधारा से आनेवाले समय में जातीवादी इतिहास लेखन की शुरुआत हुई।

20 वीं शताब्दी में मार्क्सवादी प्रवाह में तेजी आने लगी। कार्ल मार्क्स की ऐतिहासिक भौतिकवाद विचार प्रणाली से प्रभावित भारतीयों ने आर्थिक स्तर पर अर्थशास्त्र के वृष्टिकोण से इतिहास लिखना शुरू किया। 21 वीं सदी में जनसामान्य इतिहास लेखन का केंद्र बन गया है। मानव जीवन से संबंधित सभी मुद्दों पर इतिहास के कक्ष में चर्चा की जा रही है। स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर तक के सर्वव्यापी इतिहास का आविष्कार अब किया जा रहा है। इतिहास की नई धाराओं ने इतिहास को समृद्ध किया है। उनकी शोध पद्धतियों में आमूल-चूल परिवर्तन हुए हैं। इतिहास की इस नई धारा ने इतिहास के संकल्पना का चेहरा बदल दिया है। इसके चलते इतिहास विषय आंतरविद्याशाखीय बन गया है।

वैश्वीकरण के चलते मानवी जीवन में विविधीता को बढ़ावा दिया है। संस्कृति के विविधीकरण के कारण प्रादेशीक और स्थानीय संस्कृतियों और अस्मिता का विनाश होता है। इसका प्रतिकार करने के उद्देश्य से समाजशास्त्रियों और प्रकृतिवादियों को नैतिक शिक्षा का अधिष्ठान आवश्यक है। 21 वीं सदी में, सामाजिक विज्ञान के चिकित्सकों को अपने लेखन के माध्यम से समाज में सबसे अधिक हाशिए पर रहने वाले समुदायों के साथ हो रहे अन्याय को महसूस करते हुए, मुक्तिवादी सामाजिक विज्ञान की भूमिका निभानी होगी।

इतिहास की नई धारा में विश्व की इतिहास लेखन, उसकी प्रेरणा, सामाजिक मानसिकता आदि बातों को केंद्र में रखते हुए और अधिक जागृत होकर विवेकनिष्ठा से आत्मपरीक्षण कर इतिहास लेखन करने लगा। हेनरी बेर, लुसिन फेब्र और मार्क ब्लॉक द्वारा राजनीतिक घटनाओं और वर्णनात्मक इतिहास के विचार को सबसे प्रभावी और सुचारू रूप से विरोध किया है।

भारतीय इतिहास लेखन में उपेक्षा, नारीवादी इतिहास, अंबेडकरवादी विचारधारा के इतिहास के आधार पर इतिहास की नई शुरुआत हुई। 1962 में रंजीत गुहा द्वारा वंचितों (Subaltern) के इतिहास के माध्यम से, किसानों, कारीगरों, श्रमिकों, महिलाओं, आदिवासियों, दलितों, शोषितों, वंचितों, उपेक्षितों आदि को केंद्र में रखकर इतिहास लेखन शुरू किया।

अँनाल्स परंपरा:-

इतिहास के हिमनग के अदृश्य भाग को खोजने के लिए अधिक गहन वृष्टिकोण का पालन किया जाना चाहिए। मानव जीवन के परिपूर्ण इतिहास की खोज करने हेतु उसे प्रभावित करनेवाले, मानवी जीवन को आकार देनेवाले सामाजिक संरचना,

पर्यावरण, आर्थिक परिवर्तन, सांस्कृतिक पहलु आदि का विशेष विश्लेषण कर मानवी जीवन को प्रभावित करनेवाले इन सभी पहलुओं का अन्वेषण करनेवाले अध्ययन को समग्र इतिहास कहा जाता है, ऐसी विचारधार इस अँनाल्स प्रणाली में अभिव्यक्त हुई है।

1929 में स्टॅन्सबर्ग विश्वविद्यालय के मार्क ब्लॉक और ल्युसिन फेब्रव्र और उनके सहयोगियों ने मध्ययुगीन और आधुनिक समय के पूर्ववर्ति काल में इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र आदि विषयों को प्रस्तुत करते हुए राजनीतिक, इतिहास, चित्रित और गतिशील इतिहास के विषयों को छोड़कर सम्पूर्ण तथा परिपूर्ण इतिहास लिखा था। तब से पर्यावरणीय इतिहास में संख्यात्मक और विषयगत रूप से वृद्धि हुई है। इतिहासकारों ने पर्यावरणवादी आंदोलन और वन संरक्षण का भी इतिहास लिखना शुरू कर दिया। इतिहास को आंतर्विद्याशाखीय विषय बनाने का श्रेय अँनाल्स परंपरा को दिया जाता है। इस पद्धति में विभिन्न विद्या संकाय, संशोधन पद्धति, संकल्पनाओं का अंतर्भाव कर अभिनव पद्धति से प्रयोग किया जाता है। यह इतिहास विषय की एक नयी संशोधन पद्धति के रूप में विकसित हुई है। वृत्तचित्र, साहित्य, कहानियों, लोककथाओं, गीतों, मौखिक परंपराओं आदि की तरह, ऐतिहासिक लेखन में इसका भी बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इससे न केवल सूक्ष्म इतिहास का महत्व बढ़ा, बल्कि माइक्रो इतिहास के अध्ययनों से नए शोध भी हुए।

ल्युसिन फेब्रव्र, मार्क ब्लॉक, फर्नार्ड ब्रॉडेल इस विचार प्रणाली के प्रवर्तक हैं। पर्यावरणीय समस्याओं के कारण, आधुनिक समय में पर्यावरण के इतिहास के अध्ययन को महत्व मिला है। इसके फलस्वरूप पर्यावरण शास्त्र का इतिहास इस अतिरिक्त संकाय का निर्माण हुआ है। अँनाल्स विचार प्रणाली के प्रवर्तक फ्रांसीसी इतिहासकारों ने वन और पर्यावरण विज्ञान में मूल्यवान और संख्यात्मक कार्य किया है। अँनाल्स विचारप्रणाली के प्रवर्तक फर्नार्ड ब्रॉडेल ने इतिहास निर्माण एवं लेखन में सामाजिक और आर्थिक कारकों की भूमिका का विस्तार करते हुए एनालिटिकल विचारधारा का विश्लेषण किया है। इसीलिए उन्हें आधुनिक काल के महान इतिहासकार के रूप में जाना जाता है। उन्हें "विश्व प्रणाली सिद्धांत" के प्रवर्तक भी कहा जाता है। यहाँ से पर्यावरण के इतिहास को महत्व मिलना शुरू हुआ। अँनाल्स विचारप्रणाली ने फ्रांसीसी इतिहासकारों को संकीर्ण राजकीय और राजनीतिक इतिहास लेखन से दूर रखा। इतिहास लेखन में इन इतिहासकारों को नए क्षितिज से परिचित कराने के लिए सामाजिक और आर्थिक इतिहास की श्रेष्ठता साबित कर मानववंशशास्त्र, मौसम विज्ञान, मनोविज्ञान, भूगोल आदि से संबंधित विषयों की सहायता लेना अँनाल्स इतिहासकारों का मुख्य उद्देश्य था। मनुष्य को सभी विज्ञान शाखाओं की सहायता लेकर इतिहास लेखन करना चाहिए, यह अँनाल्स विचारप्रणाली ने स्पष्ट किया।

फर्नार्ड ब्रॉडेल का कहना है कि, "सभी ज्ञान शाखाओं को इतिहास के व्यापक परिधि में समाविष्ट कर उसकी पुनर्स्थापना हो जिसके फलस्वरूप मूलगामी विरोधाभास को मान्यता देकर भी हम इतिहास की अभेद्य अखंडता का सम्मान करेंगे।

स्थानीय इतिहासलेखन अँनाल्स परंपरा का परिणाम है और यूरोप में इस परंपरा ने स्थानीय इतिहास लेखन को बढ़ावा दिया। स्थानीय इतिहासलेखन भौगोलिक मुद्दों पर इतिहास का एक उपखंड है। हर गाँव की विशिष्ट संस्कृति और मानसिकता होती है, इसलिए गाँव का इतिहास लिखते समय ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और प्रशासनिक आदि सभी पहलुओं को लेकर अलग-अलग विचार किए जाने चाहिए। भारत जैसे कई भौगोलिक रूप से विशाल देशों में, लोग कई वर्षों से इस क्षेत्र में कई भौगोलिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक स्थानों में रहते हैं

और वहां से उन्होंने अपनी उप-संस्कृति बनाई है। साथ ही अपनी ऐतिहासिक विरासत को संरक्षित किया है। वैश्वीकरण के युग में जबकि सांस्कृतिक सपाटता हो रही है, स्थानिक इतिहास लेखन के माध्यम से परंपराओं, भाषाओं, संस्कृतियों को संरक्षित करने की भूमिका निर्भाई जा रही है। यही कारण है कि नए रुझानों और सिद्धांतों को पेश किया जा रहा है। यह वैज्ञानिक, सैद्धांतिक और आंतरिक्याशाखीय अनुसंधान को भी बढ़ावा दे रहा है। इसलिए स्थानीय स्तर पर खाद्य संस्कृति के इतिहास का भी अध्ययन किया जा रहा है।

स्थानीय इतिहास (Local History), क्षेत्रीय इतिहास (Regional History), शहरी इतिहास (Urban History), खाद्य संस्कृती इतिहास (Culinary History), संस्कृती का इतिहास (History of Culture), क्रिडाक्षेत्र का इतिहास (History of Sports), नारी का इतिहास (Womens History), पुरुषत्व का इतिहास (History of Masculinity) लिंगभाव इतिहास (Gender History), पर्यावरण का इतिहास (History of Environment) वैद्यकशास्त्र, विज्ञान तथा तंत्रज्ञान का इतिहास (History of Medicine, Science & Technology), साहित्य का इतिहास (History of Literature), आंबेडकरवादी विचारधारा का इतिहास (History of Ambedkarite) आदि नए विषय इतिहास अनुसंधान में दिखाई देते हैं। आधुनिक दिनों में, डिल्टी ने मानवकृति एवं संहिता के अर्थ का पता लगाने के लिए एक नए अनुसंधान पद्धति का पुरस्कार किया है। उस अनुसंधान पद्धती को अर्थनिर्णयशास्त्र (Hermeneutics) के रूप में जाना जाता है। इस पद्धति का एक महत्वपूर्ण सूत्र अपने ऐतिहासिक संदर्भ में मानव कर्तवाई के अर्थ का पता लगाना है।

21 वीं सदी में भारतीय इतिहास को एक और उत्तरआधुनिकता और नवसाम्राज्यवाद का और दूसरी ओर संकीर्ण क्षेत्रवाद और जातीयवाद आदि की चुनौती बढ़ती जा रही है। यही कारण है कि आज के इतिहास में भगवीकरण के कई आविष्कार आगे आ रहे हैं। भारत की जातीय विचारधारा अपने इतिहास लेखन के माध्यम से अपने इतिहास का विकृत चित्रण कर भारत की मजबूत, धर्मनिरपेक्ष, बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक, बहु-धार्मिक परंपराओं को चुनौती दे रही है। इसीलिए पाठ्यपुस्तकों के उत्पादन में राजनीतिक हस्तक्षेप बढ़ रहा है। इतिहास के बारे में समुदाय बहुत संवेदनशील और असहिष्णु हो रहा है। इसलिए, समय की आवश्यकता को विश्वविद्यालय के इतिहास के पाठ्यक्रम में एक नई धारा को शामिल करना समय की मांग है।